IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बघेली लोक गीतों में ऋतु वर्णन

आरती सोनी (शोधार्थी)
डॉ.एच.एस.द्विवेदी
हिन्दी विभाग शा.नर्मदा स्नातकोत्तर महाविद्या. होशंगाबाद
बरकतउल्ला विश्वविद्या.भोपाल

बघेली बघेलखंड के लोक मानस की भाषा है | लोक भाषा का निर्माण लोक जनमानस ही करता है | वही उसको जीवित रखता है,तथा वही उसका विस्तार करता है | बघेलखंड मूल `रूप से सात जिलों की सीमा में माना जाता है,किंतु लोक भाषा बघेली सात जिलों के अलावा भी कई जिलों में बोली जाती है,किंतु केंद्र में रीवा, सीधी, सतना, शहडोल, उमरिया, अनूपपुर और सिंगरौली ही है | यहीं कहीं बघेली का सुख-दुख, हंसी-खुशी, उत्साह, कलह, परिश्रम, संघर्ष, राग - विराग आदि जीवन यापन चलता है | यह क्षेत्र सदियों से आभाव और विपन्नता खेलता रहा है | समआधारित जीवन ही इसका सहारा रहा है | इसलिए इसकी लोक भाषा में जो भी लोक तत्व निकल कर आया, जो राग आया, जो गीत आये ओ सब परिश्रम के पसीने से नहाए हुए गीत है | यहां के राग में अभाव का और कष्ट का भाव सुना समझा जा सकता है | भारतवर्ष में विभिन्न प्रकार की ऋतु गीत गाए जाते हैं ,किंतु बघेलखंड के ऋतु गीतों का अपना एक अलग ही विशिष्ट महत्व है | बघेली लोक की मान्यता है कि ऋतुऐ हमेशा से प्रकृति की सहचरी रही हैं । अर्थात जिस प्रकार ऋतुओ का संबंध प्रकृति से है, उतना ही संबंध ऋतुओ का मनुष्य से भी है । प्रकृति ही ऋतुओ को बहुआयामी विस्तार देती हैं । तथा उनके गुण, स्वभाव, सुंदरता, मनोवृति - भावना को उद्घाटित करती है । ऋतु गीतों के विभिन्न स्वरूपों में उनकी मानवीय संवेदना निहित है । बघेलखंड में प्रकृति के मनोहारी स्वरूप के सभी तरफ दर्शन होते हैं । यह क्षेत्र पर्वत - पहाड़ो, बाग - बगीचो, नदी - नालो, प्रपातो विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों, घाटियों, गुफाओं, देवस्थानो,पुरातत्व की संपदा तथा प्रकृति की विभिन्न मनोहारी छवियो से युक्त है । इस भाँति यह कहना उचित प्रतीत होता है कि प्रकृति चित्रण और ऋतु चित्रण अलग-अलग होते हुए भी मनुष्य से इनका घनिष्ठ- संबंध है । ऋतुओ का नाता प्रकृति के साथ एकदम सीधा है ।दोनों का एक दूसरे के बिना पूर्ण होना संभव नहीं है । इसलिए मानस के अनेक बघेली लोकगीत ऋतु परख है । बघेली के ऋतु गीत, ऋतुओ के वैज्ञानिक गुणधर्म एवं प्रकृति के अनुरूप बने हुए हैं । इतने विविध गीत अन्य किसी लोक भाषा में नहीं है । जीवन के हर कुसंग में लोकगीत फूट पड़े, ये लोकगीत अन्य लोक भाषाओं की तरह वाचिक परंपरा में रहे हैं, और है भी । वाचिक परंपरा ही इसका सौंदर्य है । लिखित परंपरा में बोध तत्व की कमी आ जाती है । इन्हीं पारंपरिक गीतों के साथ जीवन प्रसंगों के भी गीत लोक मानस के कंठ से अनायास ही फूट पड़े हैं । ऋतु मनुष्य को सबसे अधिक प्रभावित करती है । वर्षा ऋतु हो, बसंत हो, ग्रीष्म हो या फिर शिशिर हो | सभी के गीत बघेली लोक भाषा में मिलते हैं, किंतु बारहमासी नहीं मिलते हैं | लोक समाज को सबसे अधिक प्रभावित करने वाली ऋतु वर्षा ऋतु ही है । आषाढ़ मास से लेकर भादव माह तक ये तीन महीने परिश्रम के साथ-साथ उत्सवों के भी महीने है । तीज - त्यौहार, राखी, कजलियां सब इसी महीनो के अंतर्गत आते हैं । आषाढ़ माह के बूंदा-बांदी के साथ ही मन उल्लास से भर जाता है । सावन आते-आते इस ऋतु की खेती- बारी भी संपन्न हो जाती है, बोबाई का कार्य पूरा हो जाता है । एक तरफ लहलहाती फसल हो जाती है, तो दूसरी तरफ त्योहारों का रंग चढ़ जाता है । और अपने आप ही गीत निकलने लगते हैं ।

विभिन्न व्रत त्योहारों के अवसर पर ऋतु गीत गाने का प्रचलन है, उन्ही की स्थिति और वातावरण के अनुसार गाए जाते हैं ।

बघेलखंड में ऋतु गीतों मे प्रमुख रूप से जो गीत गाए जाते हैं उनमें वर्षा गीत, हिंदुली, कजरी(कजली), झूला गीत, होली गीत (फगुआ) चइती तथा टप्पा गीत प्रमुख रूप से गाया जाता है । इन ऋतु गीतों को सामान्य रूप मे भी गाया जाता है ,लेकिन विशेष अवसरों पर विभिन्न लोक वाद्यों के साथ समूह में भी गाने का रीति- रिवाज है । समूह के लोग बड़े हाव-भाव के साथ भाव - विभोर होकर इन ऋतु गीतों को गाते हैं । कजली गाने का कोई निश्चित समय तो नहीं है, लेकिन प्राय: रक्षाबंधन के समय , रोपा लगाते समय,झूला झूलते समय, बरसात में चक्की पीसते समय इसके गाने का विशेष प्रचलन है । खासतौर से कजली में भाई-बहन का निश्छल प्रेम, सास - ननंद बहू के अनगिनत प्रसंग,पति - पत्नी की विभिन्न भावनाएं, स्थितियां एवं भाव दशाएं अभिव्यक्ति पाती है। सावन की हरियाली में हिंडोला झूलने का वर्णन भी होता है । सावन के गीत अत्यंत मार्मिक, हृदयग्राही तो होते ही हैं, इनका रंग-संयोजन, इनका भाव-संयोजन और इनकी सौंदर्य दृष्टि भी अनोखी एवं सजीव होती है ।

इन गीतों में फसल का उल्लास, श्रम का परिहार, कमाने गए घर के जिम्मेदार की स्मृतियां, अकेलेपन की टासे, विरह, संयोग पक्ष की स्मृतियां आदि का वर्णन प्रमुख रूप से इन गीतों में मिलता है।

वर्षा ऋतु का जैसे ही आगमन होता है, तो प्रकृति में चारों ओर हरियाली छा जाती है | तथा पानी भर जाता है । प्रकृति संगीतमय सौंदर्य से आत्म विभोर हो जाती है । इस प्रकार चारों तरफ खुशी ही खुशी फैल जाती है और हमारा मन प्रफुल्लित हो उठता है । उसी भाव को व्यक्त करता यह गीत-

आबा चौमास बसइ सावन महीना

घिर- घिर के छाई रे बदरिया

हो घिर-घिर के छाई रे बदरिया।

रिमझिम- रिमझिम मेघा बरसै

पवन बहइ पुरवैयाइया हो

पवन बहइ पुरवइया.....।

चम चम चम बिजुरी चमके

मन म नाचे मोरबा हो

मन म नाचे मोरबा.....।

हरी- हरी धरती खूब सजी है

अब नहीं लागे बगिया हो

अब नहींलागे बगिया.....।

अमवा क डाली म झूला झूलै

कुहू- कुहू बोलइ कोयलिया हो

कुहू-कुहू बोलइ कोयलिया.....।

आबा चौमास बसइ सावन महीना

घिर- घिर के छाई रे बदरिया

हो घिर- घिर के छाई रे बदरिया।।(1)

इस प्रकार कहा जा सकता है कि बघेलखंड में प्रकृति के हर उपादानो का यथार्थ चित्रण किया गया

है ।

प्राय: हिंदुली और कजरी सावन और भादौ में गांव-गांव गाने का प्रचलन है । पेड़ों में झूले पड़ जाते हैं , स्त्रियाँ एकत्र हो कर झूला झूलती है, और गीत भी गाती है । घर परिवार और समाज को जोड़ने का एक सुंदर गीत संकेत के माध्यम से एक स्त्री गाती है -

कउन रंग मुंगवा कउन रंग मोतिया

कउन रंग ननदी के विरना

लाल रंग मूंगा सुफेद रंग मोतिया

संवरे रंग ननदी के विरना

काहेन सोहइ मुंगवा काहेन सोहइ मोतिया

काहेन सोहइ ननदी के विरना

गले सोहइ मुंगवा कानेन सोहइ मोतिया

सेजरिया सोहइ ननदी के विरना

टूटि जइहैं मुंगवा बिखरि जइहैं मोतिया

रूठी जइहैं ननदी के विरना

बिन लेवइ मुंगवा बटोर लेवइ मोतिया

मनाय लेवइ ननदी के विरना । (2)

परिवार जुड़ाव और सामंजस्य के मिठास का यह गीत सूत्र है ।

वर्षा हो रही है । सावन उमड़-घुमड़ रहा है, लेकिन विरहिणी का विदेश गया हुआ प्रिय अभी तक नहीं लौटा । वह वियोगिनी अपनी सास से पूछती है, जो कि इस सुंदर गीत के माध्यम से उसके अंदर की पीड़ा को उद्घटित किया गया है –

कौने उमिरिया सासु निमिया लगाइउ,

कउने उमिरिया विदेशवा गये हो राम ।

खेलत-कूदत बहुआ तो निमिया लगाये,

रेखिया भिंजत गये है विदेशवा हो राम ।

फरि गये निमियां लहकि परी डरिया,

पई अबहुँ न आये विदेशिया हो रामा।। (3)

विरहिणी का एक तरफ सूनापन,एक तरफ की यादें- उमंगे आदि को रोकना तथा छुपाना चाहती है पर ऐसा हो नहीं पाता । इसी भावनाओं आदि को यह गीत व्यक्त करता है ।

सावन के महीने में नायिका पिया परदेस चला गया है और उनकी सभी सखियां कजरी खेलने के लिये आती है, तो उनका मन नहीं लगता तो सास जेठानी समझती है पर वह पिया के याद मे ही खोई रहती है । कहीं-कहीं कुछ भूलकर उत्साहित होती है, इस प्रकार एक गीत के मध्यम से उनके उदासी पन को व्यक्त किया गया है -

हरे रामा पिया गए परदेस,

चिट्टियां नहीं भेजन रे हारी ।

हरे रामा सासु हमारी अति समझामइ,

हरे बहुआ धरा करेजबा म धीर,

ललन घर अईहैं रे हारी ।

हरे रामा पिया गए परदेस,

चिट्टियां नहीं भेजन रे हारी ।

हरे रामा जेठी हमारी अति समझामइ,

हरे लहुरी धरा करेजबा म धीर,

देवर घर अईहैं रे हारी ।

हरे रामा पिया गए परदेस,

चिट्टियां नहीं भेजन रे हारी ।। (4)

ऋतुदंश का यह गीत बहुत ही मनोहरी है | और प्रिय की अनुपस्थिति को स्मृति मे बनाए रखने का संदेश भी देता हैं ।

एक दूसरा गीत है जिसमें एक युवती अपने ससुराल में है । सावन का महीना आ गया है । तीज त्योहार प्रारंभ हो गए हैं, झूले पड़ गए हैं, उसकी सभी सखी सहेलियां भी ससुराल से मायके आ चुकी है, यह सोच कर वह दु:खी है कि इस बार ना तो मायके की सभी सहेलियों से भेंट होगी, ना ही तीज त्यौहार मनाने का अवसर मिलेगा, ना ही झूले में बैठकर हिंदुली और कजरी गाने का क्योंकि इस बार सावन में उसको नहीं बुलाया गया है । वह अपनी मां के प्रति नाराज और दु:खी है -

माई हो किहिउ बजुर कै छतिया

नइहर नहीं बोलाइउ न

कउन अभागी साबन ससुरारी

झूला परे होइहीं निमिया के डारी

गढ़ गुजरात बिहाइउ काहे माया

बिरना नहीं पिठाइउ न

पाबस सुगना बोलय पहरिया

मोहि डराबय चमकि बिजुरिया

सखिया सहेली सब खेलय कजरिया

हमहिन एक अभागी न

एक त माया तू धेरिया बिसारेउ

दूसर निमिया पेंड उजारेउ

तीसर बनबा बिरह के मारेउ

हियबा घायल कीन्हेउ न

एक त माया गऊँर सुधि आबय

कोयल बोल गोलिया हिय लागय

होतें डखनबा त मय उड़ अउतिऊँ

मिलि कै बीरन भेंटतिन न ।। (5)

वह दूर ब्याही गई है नहीं तो अवसर आने पर बिना बुलाए भी आ जा लेती । ऋतु गीत केवल उल्लास भर के नहीं है बल्कि दु:खद अनुभूतिया भी उप जाते हैं ।

बघेली की एक नायिका बहू बनकर अपने ससुराल में है । वह सावन के महीने में अपनी पीड़ा का संदेश एक चिड़िया से कहती हैं कि ये चिड़िया बहन मेरे मायके जाती और कहती मेरी माँ से कि झाड़ू का एक सींक टूट जाने के कारण मेरी सास मेरे भाई को दिनभर गाली देती है, इसलिये बोझा भर झाड़ू भाई लेता आए । भाई अपनी बहन का संदेश पाकर झाड़ू का बोझा लिये बहन के ससुराल पहुँच जाता हैं।

इस प्रकार नारी के द्वारा नारी पर किये गये अत्याचार तथा सामाजिक व्यावस्था को व्यक्त करता यह गीत-

अंगना बटोरत टूटि गई बढ़ानिया

पै सासु मोरी मुंह भर गरियावाई हो न !

सरग उड़न बिनि चिरैया बहिनिया

पै,माया ते कहीतिउ संदेसबउ हो न !!

एक सींक बढ़ानी के टूटे मोरी माया

पै सासु मोरी भईया गरियाबईहो न !

एक बोझा बढ़नी पठइ देइहीं मोरि माया

पै,पठइ देइहीं बिरना हुमारेउ हो न !!

बरसन लागी सावन केरी बुंदियां

पै, हमरे बिरन नहिं आए हो न !

लीले लीले घोड़वा दुआरे हिहिनाए

पै, हमरे बिरन चले आबई हो न !

आगे आगे आमैं मोर भइया बिरनवा

पै, पाछे पाछे बढ़नी कइ बोझबउ हो न !

कहना उतारी सासु बढ़ानी कै बोझवा

पै, कहना बैठाई बीरन भइबउ हो न !!

अंगने धरावा बहुआ बढ़नी कइ बोझवा

पै, ओसारे बइठावा बिरन भइबउ हो न !

अंगना पहुंच बहिनी भेंटाइ बिरनमा

पै, भरि आई रतन पुतरियउ हो न !!(6)

इस तरह के दशहत आज भी भरी पड़ी है कही भूखी मरती है, कही जला दिया जाता है । सास द्वारा बहु का अपमान एवं दुर्व्यवहार को बताया गया है ।

एक हिन्दुली गीत में कम उम्र की बालिका वैजयंती पुष्प को देखना चाहती है । किंतु परिवार के लोग उसे वाटिका तक नहीं जाने देते क्योंकि उसकी अवस्था अभी बाल्या (कमसिन) है -

हरे रामा फूलै वैजन्ती राति

देखान हम जावै रे हारी,

हरे राम बापू देखय नही देत,

उमर मोरी बारी रे हारी ।

हरे रामा फूलै वैजन्ती राति

देखन हम जावै रे हारी ,

हरे रामा चाचा देखय नहीं देत

उमर मोरी बारी रे हारी ।

हरे रामा फूलै वैजन्ती राति

देखन हम जावै रे हारी ।। (7)

सावन में रक्षाबंधन का त्यौहार होता है । इस पर्व पर हर युवती अपने मायके जाना चाहती है । जब उन्हें रोकने का प्रयास किया जाता है तो वह दुखी हो जाती है उनके दु:ख का कारण बातों को ना मानना तथा मर्यादा हिनता नहीं है बल्कि भाई-बहन के निश्चल प्रेम के कारण होती है । जो कि इस गीत में अभिव्यक्त हुआ है -

आई सावन की बहार, जियरा लगै न हमार

हमही नैहरवा पहुँचाय दे अरे साँवरिया

मोरी कजरी खिलाय दे अरे साँवरिया

ससुरा हमरे बेईमान खोये वे हरदम ईमान

रोकै नैहरवा कै डगरिया अरे साँवरिया ।। (8)

रक्षाबंधन के जाते ही खजुलैया का त्योहार बघेलखंड में श्रावण शुक्ल के चौदस के दिन बड़े उल्लास से मनाया जाता है । यह गीत भी मुख्यत:स्त्रियों द्वारा ही गाया जाता है।इस दिन गांव के लोग रथ सजाकर किसी नदी या तालाब के पास जाते हैं और गाते बजाते हुए खजुलैया विसर्जित करते हुए गीत -

जल बिनु मछरी , पान बिन धान ,

लेबा बिनु खुजलू ,तुम बहुत अजान ,

माई गांगे।

बेला री फूली चमेली गहदाय ,

परवल फूले मइया रहि नहिं जाय,

माई गंगे ।।(9)

सावन महीने में झूला- झूलने का रिवाज पारंपरिक है । सावन के महीने में किसी पेड़ की डाल मे झूला बनाकर झूलते हुये गाया जाता है । झूला गीतो में कृष्ण- राधा का संदर्भ अक्सर आता है, जिसमें स्त्रियाँ झूला- झूलती हुए गाती हैं -

सखियां चला चली दर्शन को बृज मे झूलि रहे गोपाल ।

के हो झूलै के हो झूलावै के हो खइचइ डोरि ।

सखियां चला चली दर्शन को बृज मे झूलि रहे गोपाल ।

राधा झूलै कृष्ण झूलामैं सखियां खइचइ डोर ।

सखियां चला चली दर्शन को बृज मे झूलि रहे गोपाल ।

काहे केर है बना झूलना काहेन लागी डोर ।

सखियां चला चली दर्शन को बृज मे झूलि रहे गोपाल ।

चंदन काठ का बना हिंडोलना रेशम लागी डोर ।

सखियां चला चली दर्शन को बृज मे झूलि रहे गोपाल । (10)

इस प्रकार स्त्रियां भक्ति भाव के गीत गाकर उत्सव मनाती हैं।

सावन मे तीज त्यौहार के दिन सभी स्त्रियाँ अपने पति के लिए निर्जल उपवास रात भर जाग कर करती हैं । और दिन के समय विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाते हुए गीत गाती हैं । शाम को अपने सिंदूर और आंचल की कामना करते हुए शिव जी का पूजन करती हुए गीत -

महादेव चरनन की बलिहारी

अपने महादेव के भंगिया बोबउवे

बिच- बिच राखी कियारी महादेव

महादेव चरनन की बलिहारी।

अपने महादेव के व्याह रचउबे

गौरी बइठी कुमारी महादेव

महादेव चरनन की बलिहारी।

अपने महादेव का महल बनउबय

बिच- बिच राखब दुआरी महादेव

महादेव चरनन की बलिहारी ।।(11)

ये सभी लोकगीत ऋतुओ, पर्वो की अंगड़ाई से उपजे हैं। मनुष्य को ऋतुये ही सबसे अधिक प्रभावित करती है। जिन ऋतुओ के लोकगीत लोक में गाये जाते हैं निश्चित है उस ऋतु का प्रभाव अधिक होता है। मनुष्य मन हमेशा परिवर्तनशील होता है। ऋतुये मन को प्रभावित करती हैं। ज्यादातर गीत वर्षा ऋतु के मिलते हैं तो यह निश्चित है कि बरसात में वन, पहाड़,धरती, सब हरी-भरी हो जाती हैं।खेतों में भी फसल की उम्मीद बन जाती है। ऐसे में ऋतु का साथ देना और उसके संग उल्लास में गा उठना मनुष्य का अपना- अपना स्वभाव भी है इस तरह से हम ये मान लेते हैं कि ऋतु गीत इन्हीं मनुष्य मन के उल्लासो तथा परिस्थितियों का प्रभाव कारी स्फूटन है। ऋतु गीत लोक मानस की आत्मा में बसने वाली एक संस्कृति है। इस भांति बघेली ऋतु गीत लोक मानस के लिए एक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक उपहार हैं।

संदर्भ ग्रंथ-

1. बघेली भाषा और साहित्य- डॉ. भगवती प्रसाद शुक्ला, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड-इलाहाबाद, प्रथम संस्करण,1971 पृष्ठ क्र.- 149 से180
2. बघेली: अतरंग और बहिरंग- सेवा राम त्रिपाठी , मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल , प्रथम संस्करण, 2016 पृष्ठ क्र.162 से 184
3. बघेली साहित्य का इतिहास- डॉ. आर्य प्रसाद त्रिपाठी , साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद भोपाल, प्रकाशन वर्ष- 2011 पृष्ठ क्र.82 से 105
4. बघेली लोकगीत- लखन प्रताप सिंह उरगेश, आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल,संस्करण- 1994
5. बघेली संस्कृति और साहित्य- गोमती प्रसाद विकल, राजभाषा एवं संस्कृति संचलनालय,मध्यप्रदेश-भोपाल, प्रथम संस्करण, 1999